International Journal of Science and Social Science Research [IJSSSR] ISSN: 2583-7877

गोरखपुर जनपद में महिलाओं का राजनीतिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण

प्रो. गोपाल प्रसाद[1] , विशाल गुप्ता[2]

[1]आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

[2]एम.ए., नेट (यू. जी. सी.), राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

Corresponding Author Email: drgopalprasad@gmail.com

शोधसार— यह शोध गोरखपुर जनपद में वर्ष 2017 से 2025 तक की अवधि में महिलाओं के राजनीतिक और आर्थिक सशक्तिकरण का एक विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि इस अवधि के दौरान विभिन्न सरकारी योजनाओं, नीतियों और सामाजिक पहलों ने महिलाओं के जीवन पर क्या प्रभाव डाला और क्या वे वास्तव में अधिक सशक्त हो पाईं। अध्ययन से पता चला कि ग्राम पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। आरक्षण के कारण कई महिलाएं ग्राम प्रधान और पंचायत सदस्य बनी हैं, लेकिन वास्तविक निर्णय लेने की शक्ति अभी भी उनके पति या परिवार के सदस्यों के हाथ में है। इसे **"प्रधान पति"** की अवधारणा कहा जाता है। हालांकि, कुछ महिलाएं, विशेषकर युवा और शिक्षित महिलाएं, अब अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक हैं और स्वयं निर्णय लेने लगी हैं। आर्थिक सशक्तिकरण में आर्थिक मोर्चे पर स्वयं सहायता समूहों (SHGs) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गोरखपुर में अनेक महिलाएं इन समूहों से जुड़कर छोटे व्यवसाय जैसे अचार बनाना, सिलाई-कढ़ाई, और हस्तशिल्प आदि कर रही हैं। इन समूहों ने न केवल उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया है बल्कि उनमें आत्मविश्वास और सामाजिक एकजुटता भी बढ़ाई है। सरकारी योजनाओं जैसे मुद्रा लोन ने भी कुछ महिलाओं को अपना व्यवसाय शुरू करने में मदद की है। हालाँकि, ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण तक पहुँच की कमी, बाजार तक पहुँच का अभाव और जागरूकता की कमी अभी भी बड़ी चुनौतियाँ हैं।

मुख्य शब्द: गोरखपुर, राजनीतिक, आर्थिक सशक्तिकरण, पंचायती राज, भागीदारी, प्रतिनिधित्व, स्वयं सहायता समूह-SHG, आत्मनिर्भर |

I. परिचय

प्राचीन गोरखपुर में बस्ती, देवरिया, आजमगढ़ और नेपाल तराई के कुछ हिस्सों के जिले शामिल थे। ये क्षेत्र, जिसे गोरखपुर जनपद कहा जा सकता है, आर्य संस्कृति और सभ्यता का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। गोरखपुर कौशल के प्रसिद्ध राज्य का एक हिस्सा था, जो छठवीं सदी में सोलह महाजनपदों में से एक था। अयोध्या में अपनी राजधानी के साथ इस क्षेत्र में सबसे पहले राजा शासक इच्छवाकू थे, जिन्होंने क्षत्रिय के सौर वंश की स्थापना की थी। तब से, यह मौर्य, शुंग, कुशना, गुप्ता और हर्ष राजवंशों के पूर्व साम्राज्यों का एक अभिन्न अंग बना रहा। परंपरा के अनुसार, थारू राजा, मदन सिंह के मोगेन (900-950 ए.डी.) ने गोरखपुर शहर और आस-पास क्षेत्र पर शासन किया। मध्ययुगीन काल में, जब पूरे उत्तरी भारत मुस्लिम शासक

मुहम्मद गोरी के समक्ष पराजित हो गया तो गोरखपुर क्षेत्र को बाहर नहीं छोड़ा गया था। लंबी अवधि के लिए यह कुतुब-उद-दीन ऐबक से बहादुर शाह तक मुस्लिम शासकों के शासन के अधीन रहा। 1801 में अवध के नवाब ने ईस्ट इंडिया कंपनी को इस क्षेत्र के हस्तांतरण से आधुनिक काल को चिह्नित किया था। गोरखपुर का प्रथम कलेक्टर 1829 में श्री रूटलेज को बनाया गया था, गोरखपुर को इसी नाम के एक डिवीजन का मुख्यालय बनाया गया, जिसमें गोरखपुर, गाजीपुर और आज़मगढ़ के जिले शामिल थे। श्री आर.एम. बिराद को पहली बार आयुक्त नियुक्त किया गया था। 1865 में, नया जिला बस्ती गोरखपुर से बनाया गया था । 1946 में नया जिला देवरिया बना दिया गया था। गोरखपुर के तीसरे विभाजन ने 1989 में जिला महाराजगंज के निर्माण का नेतृत्व किया।

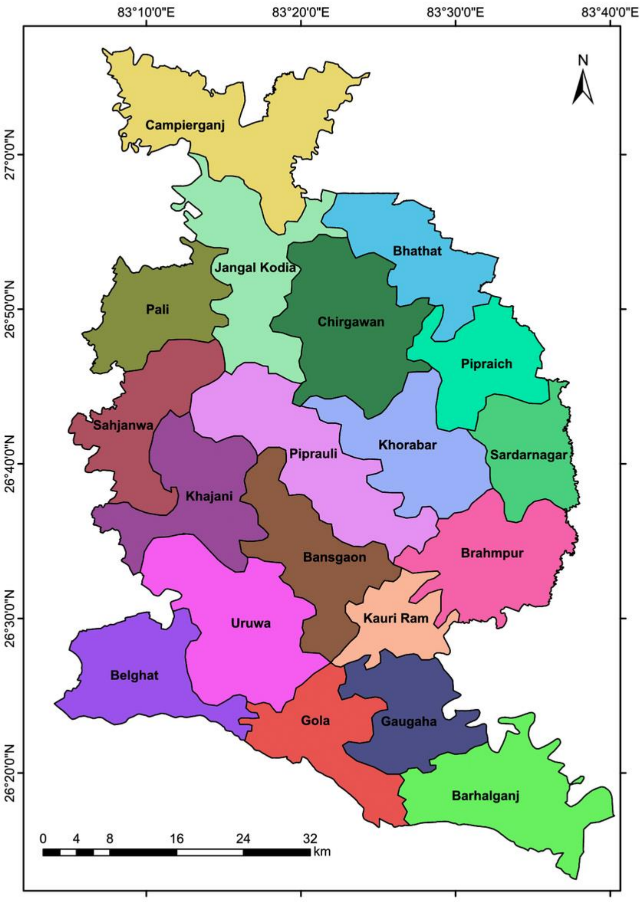

गोरखपुर जनपद 25 डिग्री 51' उत्तर व 26 डिग्री 30 ' उत्तर अक्षांश तथा 83 डिग्री 25' पूर्व व 84 डिग्री 20' पूर्व देशांतर के मध्य उत्तर प्रदेश की उत्तरी पूर्वी सीमा के सन्निकट स्थित है | नाथ परम्परा के अलौकिक संत साधक गुरु श्री गोरक्षनाथ की पावन साधना स्थली होने के कारण ही इसका नाम गोरखपुर पड़ा एवं इसी कारण से ही यह देश देशान्तर में सुविख्यात है, किसी समय पहले इसमे काफी लम्बा चौड़ा भू-भाग समाहित था, परन्तु कालान्तर में यह महाजनपद अनेक जनपदों में विभाजित हो गया | सन् 1801 में एस परिक्षेत्र के अवध के नवाब से ईस्ट इंडिया कम्पनी को स्थान्तरित होने के समय इराकी उत्तरी सीमा नेपाल में बुटवल तक , पूर्वी सीमा बिहार राज्य की सीमा से ,दक्षिण में जौनपुर ,गाजीपुर व फैजाबाद तथा पश्चिमी सीमा गोंडा व बहराईच से मिलती थी । उस समय इस जनपद में गोरखपुर व बस्ती के साथ-साथ आजमगढ़ व गाहुल के 17 परगने ,नवाबगंज गोंडा के 7 परगने व नेपाल की तराई में स्थित विनायकपुर व तिलपुर परगने इसमें शामिल थे। सन् 1802 में खैरिगढ़ के 7 परगने इससे अलग हुए , सन् 1816 में युद्ध के उपरान्त एक समझौते के अन्तर्गत विनायकपुर व तिलपुर परगनों को नेपाल को सौपा गया ,इसी समय नवाबगंज के परगनों को पुनः अवध में शामिल किया गया ,सन् 1865 में मगहर परगने के अधिकांश भाग व परगना विनायकपुर के कुछ भाग से मिलकर जनपद बस्ती का सृजन हुआ , सन् 1904 में धुरियापार परगना के 122 ग्राम घाघरा नदी की धारा में परिवर्तन के कारण प्रशासनिक दृष्टीकोण से आजमगढ़ को स्थानान्तरित किया गया, सन् 1946 में इसका विभाजन जनपद गोरखपुर और जनपद देवरिया के रूप में तथा सन् 1989 में जनपद गोरखपुर से ही जनपद महाराजगंज, पूर्वी सीमा पर जनपद देवरिया व कुशीनगर, दक्षिण में मऊ, आजमगढ़ व अम्बेडकरनगर स्थित है तथा पश्चिमी सीमा पर संत कबीर नगर व जनपद सिद्धार्थनगर स्थित है।

जनपद में वर्तमान समय में 7 तहसील - सदर ,कैम्पियरगंज ,चौरीचौरा ,सहजनवा ,खजनी, बांसगांव व गोला है। राप्ती, घाघरा, रोहित, आमी, कुआना, तथा गोर्रा जनपद में प्रवाहित होने वाली प्रमुख नदियां है। गोरखपुर जनपद की कुल जनसंख्या 2011

की जनगणना के अनुसार 4,440,895 है जिसमें पुरुषों की कुल जनसंख्या 2,277,777 और महिलाओं की कुल जनसंख्या 2,163,118 हैं |

जनसांख्यिकी :

1. क्षेत्रफल - 3483.8 वर्ग कि.मी.
2. तहसील - 7
3. विकासखण्ड - 20
4. ग्राम पंचायत - 1294
5. न्याय पंचायत - 191
6. कुल ग्राम - 3448
7. नगर निगम - 1
8. नगर पंचायत - 11

भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण का मुद्दा एक महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विषय रहा है। दशकों से सरकार और गैर-सरकारी संगठन (NGOs) दोनों ही इस दिशा में काम कर रहे हैं। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को समाज में समान अवसर और अधिकार देना, जिससे वे अपने जीवन से जुड़े हुए निर्णय स्वयं ले सकें। यह सशक्तिकरण दो प्रमुख स्तंभों पर टिका हैः राजनीतिक सशक्तिकरण और आर्थिक सशक्तिकरण। राजनीतिक सशक्तिकरण का आशय निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारी से है, जबकि आर्थिक सशक्तिकरण उन्हें वित्तीय रूप से स्वतंत्र बनाता है।

II. उद्देश्य

उत्तर प्रदेश का गोरखपुर जनपद, अपनी विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संरचना के कारण इस विषय पर अध्ययन के लिए एक प्रासंगिक क्षेत्र है। यह क्षेत्र कृषि प्रधान होने के साथ साथ कई छोटे और मझोले उद्योगों का केंद्र भी है, हालांकि, यहां महिलाओं की स्थिति अभी भी कई सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रही है। इस शोध का उद्देश्य गोरखपुर जनपद में महिलाओं के राजनीतिक और आर्थिक सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति का गहन विश्लेषण करना, इन क्षेत्रों में उनकी भागीदारी को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाना और उनके सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए ठोस सुझाव देना है। महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण को निम्न रूप में वर्णन किया जा सकता है:

- राजनीतिक सशक्तिकरण: गोरखपुर में महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण मुख्य रूप से पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से देखा जा सकता है, जहाँ सीटों के आरक्षण ने उनकी भागीदारी को बढ़ाया है।
- बढ़ी हुई भागीदारीः आरक्षण के कारण ग्राम पंचायतों में महिला प्रधानों और सदस्यों की संख्या बढ़ी है। इससे महिलाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल होने का अवसर मिला है।
- सतह पर सशक्तिकरणः कई मामलों में, महिलाएं केवल नाममात्र की प्रतिनिधि होती हैं, जबकि वास्तविक निर्णय उनके परिवार के पुरुष सदस्यों द्वारा लिए जाते हैं। इसे "प्रधान-पति" या "सरपंच-पति" के नाम से जाना जाता है।
- जागरूकता की कमीः ग्रामीण क्षेत्रों में कई महिलाएं अपने राजनीतिक अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में पूरी तरह से जागरूक नहीं हैं, जिससे वे अपने पद का प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं कर पाती हैं।
- सामाजिक बाधाएँ: पितृसत्तात्मक समाज और रूढ़िवादी विचार महिलाओं के लिए स्वतंत्र रूप से राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने में बाधा डालते हैं।

गोरखपुर में महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण भी कई कारकों से प्रभावित है, निम्न रूप में वर्णन किया जा सकता है:

- स्वरोजगार और स्वयं सहायता समूह (SHG): कई शोधों में पाया गया है कि स्वयं सहायता समूहों (SHG) ने महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये समूह महिलाओं को छोटे व्यबसाय शुरू करने के लिए ऋण और प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।
- कृषि और गैर-कृषि क्षेत्रः ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं मुख्य रूप से कृषि कार्यों में संलग्न हैं, लेकिन उनका श्रम अवसर अदृश्य और कम मूल्यांकित होता है। शहरी क्षेत्रों में, वे छोटे व्यवसायों, जैसे सिलाई-कढ़ाई, हस्तशिल्प और घरेलू सेवाओं में लगी हुई हैं।
- आय पर नियंत्रण की कमीः कई मामलों में, महिलाएं जो आय अर्जित करती हैं, उस पर उनका पूरा नियंत्रण नहीं होता है। आय का उपयोग अक्सर परिवार के पुरुष सदस्यों द्वारा नियंत्रित किया जाता है।
- शिक्षा और कौशल की कमीः शिक्षा और कौशल विकास की कमी महिलाओं को बेहतर रोजगार के अवसरों से वंचित करती है, उन्हें अवसर कम वेतन वाले और अनौपचारिक क्षेत्रों में काम करना पड़ता है।
- सरकारी योजनाओं का लाभः सरकार द्वारा चलाई गई कई योजनाएं, जैसे कि प्रधानमंत्री मुद्रा योजना और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM), महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में सहायक रही हैं, लेकिन इन योजनाओं के बारे में जागरूकता और पहुंच अभी भी सीमित है।

III. पद्धति

यह शोध एक गुणात्मक (Qualitative) और मात्रात्मक (Quantitative) मिश्रित दृष्टिकोण (mixed method approach) पर आधारित है ।

मात्रात्मक दृष्टिकोणः सर्वेक्षण (Survey): गोरखपुर जनपद के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से यादृच्छिक नमूनाकरण (Random Sampling) विधि का उपयोग करके 500 महिलाओं का सर्वेक्षण किया है । प्रश्नावली में उनकी शैक्षिक योग्यता, आय के स्रोत, संपत्ति के स्वामित्व, राजनीतिक भागीदारी (वोट देना, चुनाव लड़ना आदि), और स्वयं सहायता समूहों में उनकी भागीदारी से संबंधित प्रश्न शामिल है ।

आकंडा विश्लेषणः सर्वेक्षण से प्राप्त डेटा का विश्लेषण सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर (statistical software) उपयोग करके किया जाएगा। विवरणात्मक सांख्यिकी (descriptive statistics) और सहसंबंध विश्लेषण (correlation analysis) का उपयोग कर विभिन्न चरों के बीच संबंधों का अध्ययन किया है ।

गुणात्मक दृष्टिकोंणः गहन साक्षात्कार (In-depth Interviews): चुनिंदा महिला प्रतिनिधियों (elected women representatives) (जैसे ग्राम प्रधान, पार्षद), स्वयं सहायता समूह के सदस्यों, सरकारी अधिकारियों, और NGO प्रतिनिधिर्ण के साथ गहन साक्षात्कार किए है । इसका उद्देश्य उनके अनुभवों, चुनौतियों और सफलताओं को समझना है।

फोकस समूह चर्चा (Focus Group Discussions): महिलाओं के छोटे समूहों के साथ चर्चा की जाएगी ताकि उनके विचारों, धारणाओं और अनुदर्भ को गहराई से समझा जा सके।

केस स्टडी (Case Studies): कुछ सफल महिला उद्यमियों और राजनीतिक नेताओं की केस स्टडी की की गयी है ताकि उनके सफलता के पीछे के कारकों का विश्लेषण किया जा सके।

आंकड़ा सर्वेक्षण-

गोरखपुर जनपद के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से यादृच्छिक नमूनाकरण (Random Sampling) विधि का उपयोग करके 500 महिलाओं का सर्वेक्षण किया है, इस सर्वेक्षण के अनुसार आंकड़ों की संरचना निम्न प्रकार है-

- क्षेत्र → ग्रामीण (≈60%) और शहरी (≈40%)
- शिक्षा → ग्रामीण में प्राथमिक/सेकेंडरी की संख्या अधिक, शहरी में ग्रेजुएट/पोस्टग्रेजुएट की संख्या अधिक
- आय के स्त्रोत → ग्रामीण: कृषि/मज़दूरी, शहरी: नौकरी/व्यवसाय
- संपत्ति का स्वामित्व → लगभग 45% के पास संपत्ति
- वोट → लगभग 85% महिलाएँ वोट करती हैं
- राजनीतिक सदस्यता → केवल ~6% महिलाएँ चुनाव लड़ने की इच्छुक/अनुभव रखती हैं
- स्वयं सहायता सदस्यता → ग्रामीण में अधिक (~60%), शहरी में कम (~30%)
- मासिक आय → ग्रामीण (₹1,000-20,000), शहरी (₹5,000-50,000)

IV. आकड़ों का विश्लेषण

इस प्रकार, हम लिए गए आंकड़ों का विश्लेषण जब विभिन्न सांख्यिकी एवं शोध के अन्य उपकरणों का प्रयोग करते हैं, तो निम्नांकित आरेखीय विवरण प्राप्त होता है।

ग्राफ 1. आय स्रोत के अनुसार मासिक आय का योग

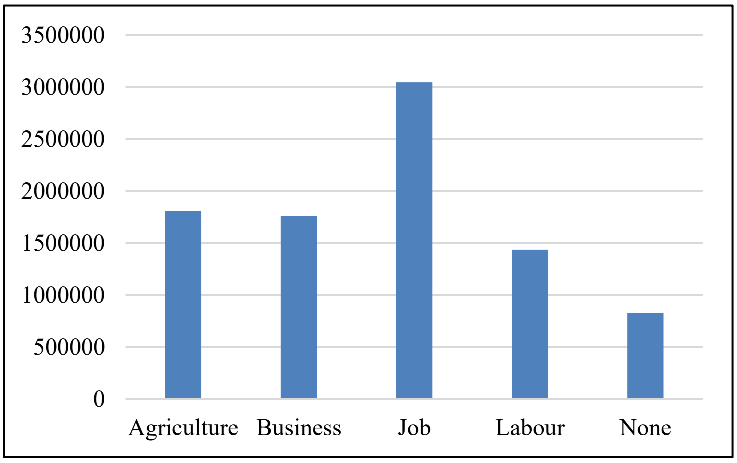

INCOME SOURCE	MONTHLY INCOME
Agriculture	1807722
Business	1759708
Job	3045064
Labour	1435298
None	826210

ग्राफ 1 के अंतर्गत आय के स्रोतों के अनुसार महिलाओं की मासिक आय को दर्शाया गया है, जिसमें आय का विश्लेषल करने के लिए गोरखपुर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत कृषि, व्यवसाय, नौकरी तथा मजदूरी के रूप में मुख्य रूप से आय के चार स्त्रोतों को सम्मिलित किया गया है।

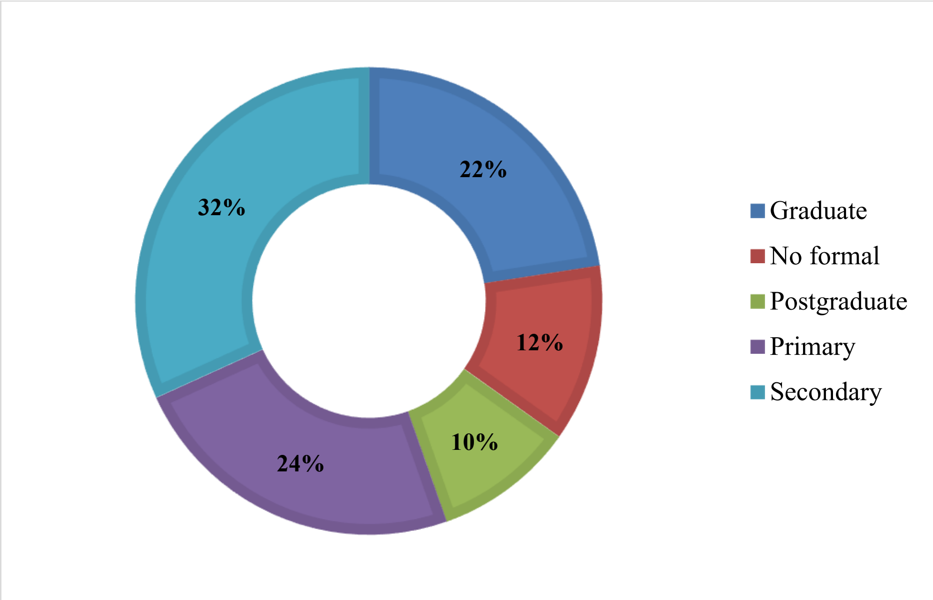

ग्राफ़ 2. शिक्षा के अनुसार मासिक आय का योग

ग्राफ 2 पाई चार्ट है, जिसमें गोरखपुर की महिलाओं की शिक्षा के संदर्भ में उनकी आय का वर्गीकरण किया गया है। गोरखपुर के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं का प्राथमिक, सेकेंडरी ग्रेजुएट, पोस्टग्रेजुएट तथा अनौपचारिक शिक्षा के रूप में आय के प्रतिशत का विश्लेषण किया गया है।

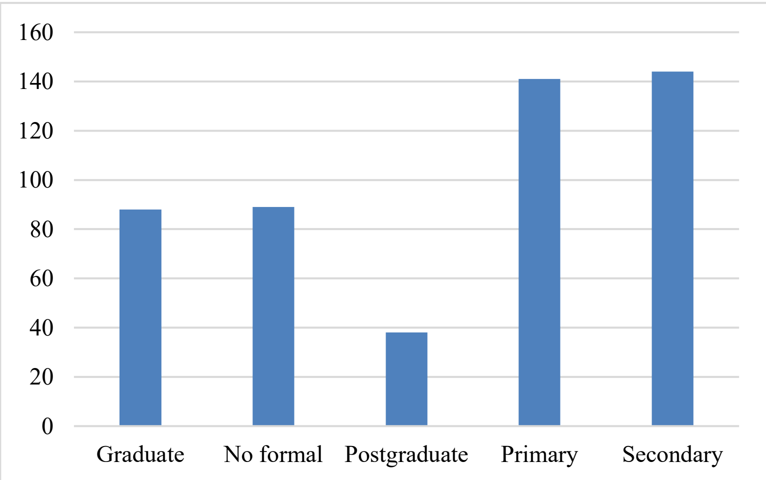

ग्राफ़ 3. शिक्षा के अनुसार उत्तरदाताओं की संख्या

EDUCATION	COUNT OF RESPONDENT
Graduate	88
No formal	89
Postgraduate	38
Primary	141
Secondary	144

ग्राफ 3 के अंतर्गत गोरखपुर के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं का उनकी शिक्षा के आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

गोरखपुर जनपद में 2017-2025 के बीच महिलाओं के राजनीतिक और आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण प्रगति देखी गई। इस अवधि में, स्वयं सहायता समूहों (SHGs) और सरकारी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं की आर्थिक भागीदारी बढ़ी, जबकि राजनीतिक प्रतिनिधित्व में भी धीरे-धीरे सुधार हुआ। गोरखपुर में महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का मुख्य आधार स्वयं सहायता समूह (SHGs) रहे हैं। इन समूहों ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने और स्वरोजगार के अवसर पैदा करने में मदद की

है। महिलाएं SHGs के माध्यम से कई तरह के छोटे व्यवसाय चला रही हैं, जिनमें साबुन, वाशिंग पाउडर, मशरूम, मोमबत्ती, अगरबत्ती और टेराकोटा उत्पादों का निर्माण शामिल है। कई महिलाएं घर बैठे महीने में ₹10,000 से ऊपर तक की कमाई कर रही हैं। गोरखपुर में वर्तमान में कार्य कर रहे कुछ स्वयं सहायता समूहों का वर्णन इस प्रकार है:-

- कृषि-आधारित सूक्ष्म उद्यम- सब्ज़ी उगाना, स्नैक/नाश्ता बनाना, कृत्रिम आभूषण, बैग-मेकिंग, ड्रेस-स्टिचिंग, न्यूट्रिशन/फोर्टिफाइड फूड–इन क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर SHG काम कर रहे हैं।
- टेक-होम राशन (THR) उत्पादन इकाइयाँ - समेकित बाल विकास सेवाएँ (ICDS)/ उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (UPSRLM) के साथ ही यूपी सरकार ने World Food Program के साथ MoU के बाद ज़िलों तथा ब्लाकों में महिला स्वयं सहायता समूह के नेतृत्व वाली THR यूनिटें स्थापित कीं; इसमें गोरखपुर भी शामिल है। इसका उद्देश्य है, आँगनवाड़ी को पौष्टिक THR सप्लाई।
- मशरूम कल्टिवेशन क्लस्टर- गोरखपुर में SHG महिलाओं द्वारा उगाए गए मशरूम को मिड-डे मील (MDM) में जोड़ने की पहल की गई, इसका लक्ष्य खरीद की व्यवस्था (जैसे "महालक्ष्मी प्रोड्यूसर कंपनी") के साथ-साथ स्वास्थ्य तथा आय में सुधार।
- बैंक सखी / बैंक मित्र सखी (डोरस्टेप बैंकिंग)- UPSRLM के माध्यम से महिला बैंक मित्र नेटवर्क को बढ़ाकर घर-घर बैंकिंग, DBT/लेन-देन, बचत/क्रेडिट तक पहुँच; औसत ट्रांज़ैक्शन वैल्यू में हाल के वर्षों में बड़ी वृद्धि दर्ज हुई है।
- ड्रोन दीदी (खेती में ड्रोन सेवाएँ)- खेतों में स्प्रे/मैपिंग जैसी सेवाओं हेतु SHG महिलाओं को ड्रोन प्रशिक्षण दिया जा रहा है।
- दूध उत्पादक संगठन व चिलिंग-सेंटर से जुड़ी आजीविकाएँ- हालिया रिपोर्ट के अनुसार, जिले में दूध उत्पादक संगठन व कई मिल्क चिलिंग सेंटर विस्तारित किए गए हैं जो SHG महिलाओं के लिए डेयरी-आधारित कमाई के अवसर को बढ़ाता है।
- अगरबत्ती/हस्तशिल्प व कोविड-बाद जीविका- गोरखपुर के अनेक इलाकों में कई SHG ने अगरबत्ती/हैंडिक्राफ्ट आदि से परिवार चलाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।
- जिला-स्तरीय समेकित आँकड़े/ब्लॉक-वार SHG डेटा- कुल SHG गठन, सदस्यता, फंडिंग/लिंकिज़ आदि की आधिकारिक अपडेट NRLM/UPSRLM के डैशबोर्ड पर नियमित ब्लॉक-वार तथा श्रेणी-वार रिपोर्टें उपलब्ध कराई जाती है।

सरकार ने राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) जैसी योजनाओं के तहत महिलाओं को ऋण और प्रशिक्षण देकर उनके व्यवसायों को बढ़ावा दिया। उन्हें टेक होम राशन (THR) प्लांट और कोटे की दुकानों के संचालन का जिम्मा भी दिया गया है, जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है। कई महिलाएं डेयरी फार्मिंग और अन्य कृषि गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। कुछ महिला दुग्ध उत्पादक संगठन (MPO) से जुड़कर अपनी आय में काफी वृद्धि कर चुकी हैं। राजनीतिक प्रतिनिधित्व में अभी भी धीमी गति से सुधार हो रहा है, लेकिन महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। पंचायती राज संस्थाओं और स्थानीय निकायों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, जिससे उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल होने का मौका मिला है। राजनीतिक दल भी महिला वोटरों और उम्मीदवारों पर अधिक ध्यान दे रहे हैं, और उनके लिए योजनाओं की घोषणा कर रहे हैं। नारी शक्ति बंदन अधिनियम के तहत लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण की घोषणा इस दिशा में एक बड़ा कदम है। कुछ महिलाएं पुलिस और प्रशासनिक पदों पर भी अपनी पहचान बना रही हैं। हालांकि अभी भी उन्हें कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

गोरखपुर जनपद में 2017-2025 के बीच महिलाओं के राजनीतिक और आर्थिक सशक्तिकरण पर हुए शोधों से पता चलता है कि इस अवधि में सरकार की विभिन्न योजनाओं, स्वयं सहायता समूहों और शिक्षा के माध्यम से महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। **राजनीतिक सशक्तिकरण** गोरखपुर में महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण पर शोध मुख्य रूप से पंचायती राज व्यवस्था में उनकी भागीदारी पर केंद्रित है। पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटें आरक्षित होने से उनकी भागीदारी बढ़ी है। कुछ शोधों में यह पाया गया है कि कई महिला सरपंच या सदस्य अपने परिवार के पुरुष सदस्यों द्वारा निर्देशित होती हैं। विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संगठन महिलाओं को उनके राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूक करने और नेतृत्व क्षमता का प्रशिक्षण देने का काम कर रहे हैं। इससे वे निर्णय लेने की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय रूप से भाग ले पा रही हैं। महिलाओं को अभी भी राजनीतिक क्षेत्र में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे रूढ़िवादी सोच. जातिगत भेदभाव और राजनीतिक दबाव। इसके बावजूद, शिक्षा के बढ़ते स्तर ने उन्हें इन चुनौतियों का सामना करने में मदद की है।

आर्थिक सशक्तिकरण 2017-2025 की अवधि में गोरखपुर में महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के कई महत्वपूर्ण आयाम सामने आए हैं। स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को छोटे ऋण और वित्तीय सेवाओं तक पहुँच प्रदान की है। इन समूहों से जुड़ी महिलाओं ने छोटे व्यवसाय, जैसे डेयरी, हस्तशिल्प और खाद्य प्रसंस्करण शुरू किए हैं। इन समूहों के माध्यम से महिलाओं को विभिन्न कौशल का प्रशिक्षण दिया जाता है। उदाहरण के लिए, उन्हें पशुपालन और कृषि से संबंधित तकनीकों के बारे में सिखाया जाता है, जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है।

सरकारी योजनाएँ मिशन शक्ति और लखपति दीदी योजनाः उत्तर प्रदेश सरकार की ये योजनाएँ महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने पर केंद्रित हैं। लखपति दीदी योजना के तहत गोरखपुर की हजारों महिलाओं को डेयरी जैसे क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाया गया है, जिससे वे लखपति दीदी बन चुकी हैं। लोन और अनुदानः सरकार महिलाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए ब्याज मुक्त ऋण और सब्सिडी भी प्रदान करती है। रोजगार के अवसरः बैंकिंग कॉरस्पोंडेंट सखी और पुष्टाहार वितरण जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को गाँव स्तर पर रोजगार के नए अवसर मिल रहे हैं।

V. चुनौतियां

1. सामाजिक दबाबः महिलाओं को अभी भी पारिवारिक जिम्मेदारियों और सामाजिक दबाव के कारण व्यवसाय शुरू करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।
2. संसाधनों तक सीमित पहुँचः ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की वित्तीय सेवाओं, बाजार और सरकारी योजनाओं तक पहुँच सीमित है, जिससे उनके सशक्तिकरण की गति धीमी हो जाती है।

VI. निष्कर्ष

गोरखपुर जनपद में महिलाओं के राजनीतिक और आर्थिक सशक्तिकरण पर किया गया यह शोध, महिलाओं की वर्तमान स्थिति, उनके सामने आने वाली चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं का एक विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह शोध दर्शाता है कि महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए चलाए जा रहे विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी प्रयासों के बावजूद, उनकी स्थिति में वांछित सुधार अभी बाकी है। राजनीतिक और आर्थिक दोनों ही क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि तो हुई है, लेकिन यह

वृद्धि सतही है और गहन संरचनात्मक बदलाव की आवश्यकता को रेखांकित करती है। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि गोरखपुर जनपद में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी मुख्य रूप से पंचायत स्तर तक सीमित है। 73वें और 74वें संविधान संशोधन ने पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण प्रदान करके उन्हें राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल होने का अवसर दिया है। इससे प्रधान, बीडीसी (क्षेत्र पंचायत सदस्य) और जिला पंचायत सदस्य जैसे पदों पर महिलाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। हालांकि, इस भागीदारी का एक गंभीर पहलू यह है कि अधिकांश महिला जनप्रतिनिधि अपने पुरुष परिवार सदस्यों (पति, पिता या भाई) द्वारा नियंत्रित की जाती हैं। 'प्रधानपति' की अवधारणा अभी भी मजबूत है, जहाँ पुरुष सदस्य ही निर्णय लेते हैं और महिला केवल रबर स्टैंप की तरह काम करती है। महिला जनप्रतिनिधियों में जागरूकता और शिक्षा की कमी एक बड़ी चुनौती है। कई महिलाएं अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों से अनभिज्ञ हैं। वे बजट आवंटन, योजनाओं के कार्यान्वयन और सरकारी प्रक्रियाओं को ठीक से नहीं समझ पातीं। राजनीतिक दलों की मानसिकता भी एक बाधा है, जो अभी भी महिलाओं को केवल वोट बैंक के रूप में देखती हैं और उन्हें निर्णय लेने वाले उच्च पदों पर तरजीह नहीं देती। सामाजिक रूढ़ियाँ और पितृसत्तात्मक सोच भी महिलाओं को राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने से रोकती हैं। महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में आने से हतोत्साहित किया जाता है, और उन पर घरेलू जिम्मेदारियों का बोझ डाला जाता है। जागरूकता कार्यक्रम और प्रशिक्षण सत्र महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। जो महिलाएं शिक्षित हैं और आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं, वे अधिक प्रभावी ढंग से अपनी भूमिका निभाती हैं। ग्राम सभाओं में महिलाओं की उपस्थिति और उनका सक्रिय योगदान अभी भी बहुत कम है, जो दर्शाता है कि जमीनी स्तर पर बदलाव की गति धीमी है।

आर्थिक सशक्तिकरण के मामले में, गोरखपुर जनपद में स्थिति मिश्रित है। स्वयं सहायता समूहों (SHGs) ने महिलाओं को लघु व्यवसाय शुरू करने, बचत करने और आपसी सहयोग से आगे बढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कृषि, पशुपालन, सिलाई-कढ़ाई, हस्तशिल्प और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। सरकारी योजनाएं, जैसे मुद्रा योजना, दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) और प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP) ने महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की है। हालांकि, असंगठित क्षेत्र में काम करने वाली अधिकांश महिलाओं की स्थिति असुरक्षित है। उन्हें कम वेतन मिलता है और उनके पास निश्चित रोजगार या सामाजिक सुरक्षा नहीं होती। कृषि क्षेत्र में महिलाएं श्रमिक के रूप में काम करती हैं, लेकिन उन्हें अक्सर पुरुषों की तुलना में कम मजदूरी मिलती है। पारिवारिक निर्णयों में उनकी आर्थिक स्वायत्तता अभी भी सीमित है। वे कमाती तो हैं, लेकिन आय का प्रबंधन और खर्च करने का अधिकार अक्सर उनके पास नहीं होता।

शिक्षा और कौशल विकास की कमी भी एक बड़ी बाधा है। कई महिलाएं पारंपरिक और कम आय वाले व्यवसायों तक ही सीमित हैं क्योंकि उनके पास आधुनिक बाजार की मांगों के अनुरूप कौशल या शिक्षा नहीं है। बाजार तक पहुंच का अभाव, ऋण लेने में कठिनाई और जागरूकता की कमी भी उनके आर्थिक विकास को बाधित करती है। महिलाओं के नाम पर संपत्ति का स्वामित्व अभी भी बहुत कम है, जिससे वे आर्थिक रूप से कमजोर बनी रहती हैं।

VII. सुझाव

1. जागरूकता और शिक्षा: महिला जनप्रतिनिधियों और आम महिलाओं के लिए व्यापक जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाएं। उन्हें कानूनी, राजनीतिक और वित्तीय साक्षरता प्रदान की जाए।

2. पुरुषों की भागीदारी: पुरुषों को सशक्तिकरण की प्रक्रिया में शामिल किया जाए ताकि वे महिलाओं के अधिकारों का सम्मान करें और सहयोगी बनें।
3. कौशल विकास: महिलाओं को आधुनिक और बाजार-उन्मुख कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे उच्च आय वाले रोजगार प्राप्त कर सकें।
4. वित्तीय पहुंच: सरल और सुलभ ऋण योजनाओं को बढ़ावा दिया जाए और महिलाओं को वित्तीय संस्थानों से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
5. नेतृत्व विकास: युवा लड़कियों को बचपन से ही नेतृत्व की भूमिकाओं के लिए तैयार किया जाए ताकि वे भविष्य की राजनीतिक और आर्थिक नेतृत्वकर्ता बन सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूचि

1. चौधरी, बी.एल. (2022). गोरखपुर में ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण.
2. यादव, र.के. (2021). महिला स्वयं सहायता समूह और गोरखपुर का विकास.
3. त्रिपाठी, एस. (2023). गोरखपुर: बदलते परिवेश में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी.
4. सिंह, पी. (2020). गोरखपुर जनपद में महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता का अध्ययन.
5. शर्मा, योगेंद्र. (2018). महिला सशक्तिकरण दशा और दिशा.
6. साधना, एस. (2019). भारत में महिला सशक्तिकरण: एक सामाजिक विश्लेषण.
7. वर्मा, ए. (2020). ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण.
8. त्रिवेदी, आर. (2021). भारत में नारीवादी आंदोलन का इतिहास.
9. मिश्रा, एन. (2022). महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण: चुनौतियाँ और समाधान.
10. गुप्ता, आर. (2018). महिला विकास एवं सशक्तिकरण.
11. सहनी, प्रतिभा. (2020). महिला सशक्तिकरण और स्वयं सहायता समूह.
12. सक्सेना, दीपावली. (2021). महिला सशक्तिकरण: सिद्धांत और वास्तविकता.
13. यादव, कमला. (2019). महिला सशक्तिकरण और मानवाधिकार.
14. कुमार, सतीश. (2023). महिला सशक्तिकरण एवं राजनीतिक सहभागिता.
15. तिवारी, डी. (2020). उत्तर प्रदेश में महिला सशक्तिकरण की सरकारी योजनाएं.
16. चौरसिया, एम. (2018). भारत में महिला शिक्षा और उसका प्रभाव.
17. सिंह, अमिता. (2022). महिला सशक्तिकरण और भारतीय समाज.

18. त्रिपाठी, रेणु. (2021). भारत में महिला सशक्तिकरण.

19. कश्यप, के. (2019). भारतीय महिलाएं और राजनीति: बदलते परिप्रेक्ष्य.

20. पटेल, एच. (2023). आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान.

21. https://gorakhpur.nic.in/